CIVIL SERVICES (MAIN) EXAM-2022 *वियोज्य DETACHABLE*

दर्शनशास्त्र (प्रश्न-पत्र I)
PHILOSOPHY (Paper I)

निर्धारित समय : तीन घण्टे Time Allowed : Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

उत्तर देने के पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें :

इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो **दो खण्डों** में विभाजित हैं तथा **हिन्दी** एवं **अंग्रेजी** दोनों में छपे हुए हैं ।

उम्मीदवार को कुल **पांच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।

प्रश्न संख्या **1** और **5** अनिवार्य हैं तथा बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम **एक** प्रश्न चुनकर **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के लिये नियत अंक उसके सामने दिए गए हैं ।

प्रश्नों के उत्तर उसी प्राधिकृत माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए । प्राधिकृत माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे ।

प्रश्नों में शब्द-सीमा, जहाँ उल्लिखित है, को माना जाना चाहिए ।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी । आंशिक रूप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर को भी मान्यता दी जाएगी यदि उसे काटा न गया हो । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए ।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI** and in **ENGLISH**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

खण्ड 'A' SECTION 'A'

1.(a) ज्ञानमीमांसा एवं तत्त्वमीमांसा के बीच सम्बन्ध की स्थापना हेतु प्लेटो किस प्रकार आकार सिद्धान्त का उपयोग करते हैं ? विवेचना कीजिये ।

How does Plato use the theory of forms to establish the relation between epistemology and metaphysics ? Discuss. 10

1.(b) बर्ट्रेण्ड रसेल की तार्किक विश्लेषण की विधि क्या है ? अन्ततः किस प्रकार इसकी परिणति अर्थ के अणुवादी सिद्धान्त में होती है ? विवेचना कीजिये ।

What is Bertrand Russell's method of logical analysis ? How does it ultimately end in establishing atomic theory of meaning ? Discuss. 10

1.(c) उत्तरवर्ती विट्गेन्स्टाइन की जीवन-रूप भाषा की अवधारणा की समर्थनीयता की स्थापना कीजिए ।

Establish the tenability of later Wittgenstein's motion of language as form of life. 10

1.(d) मनोविज्ञानवाद क्या है ? प्रागनुभविक संवृतिशास्त्र सम्बन्धी अपने विमर्श में हुसर्ल किस प्रकार मनोविज्ञानवाद की समस्या का परिवर्जन करते हैं ? समालोचनात्मक विवेचना कीजिए ।

What is psychologism ? Critically discuss the way Edmund Husserl avoids the problem of psychologism in the discourse of transcendental phenomenology. 10

1.(e) इमैन्युएल काण्ट के अनुसार अंत:प्रत्यक्ष क्या है ? उनके द्वारा प्रस्तुत देश तथा काल के प्रागनुभविक प्रतिपादन के सन्दर्भ में विवेचना कीजिए ।

What is apperception, according to Immanuel Kant ? Discuss with reference to his transcendental exposition of space and time. 10

2.(a) हाइडेगर के 'जगत में होना' सम्बन्धी विचार का समीक्षात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिये तथा मानव अस्तित्व (दाज़ाइन) के परिप्रेक्ष्य में 'प्रामाणिकता' की समस्या की विवेचना कीजिये ।

Provide a critical account of Heidegger's Being-in-the-world and discuss the problem of 'authenticity' in the context of Dasein. 20

2.(b) क्या अरस्तू का तादात्म्य के स्वरूप सम्बन्धी मत उनके इस मत से साम्यता रखता है कि कारण प्रक्रियानुगत है ? उचित उदाहरण देते हुए व्याख्या कीजिए ।

Is Aristotle's view of nature of identity in consonance with his metaphysical view of causes as processes ? Discuss giving suitable examples. 15

2.(c) स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य की अवधारणा का विवेचन कीजिये । द्रव्य सम्बन्धी उनकी विवेचना क्या सर्वेश्वरवाद की ओर ले जाती है ? अपने मत की पुष्टि कीजिये ।

Discuss the concept of substance according to Spinoza. Does his discussion on substance lead to pantheism ? Substantiate your view. 15

3.(a) शुद्ध तर्कबुद्धि की भ्रमात्मक प्रवृत्तियों की व्याख्या के लिए कान्ट किस प्रकार विप्रतिषेधों की रचना करते हैं ? कान्ट द्वारा प्रस्तुत विप्रतिषेधों की व्याख्या एवं परीक्षा कीजिए ।

How does Kant construct antinomies to illustrate the illusory tendencies of pure reason ? Explain and examine the antinomies presented by Kant. 20

3.(b) जार्ज विल्हेल्म हेगल के दर्शन में द्वन्द्वात्मक विधि क्या है ? निरपेक्ष के फलीभूतिकरण में यह विधि किस प्रकार सहायक है ? विवेचना कीजिए ।

What is the dialectical method in the philosophy of Georg Wilhelm Hegel ? How does this method help in realizing the Absolute ? Discuss. 15

3.(c) क्या विट्गेन्स्टाइन के भाषा के चित्र-सिद्धान्त में चित्ररूप एवं तार्किक रूप में भिन्नता है ? तार्किक रूप कैसे भाषा तथा यथार्थता के बीच सम्बन्ध को निर्दिष्ट करता है ? व्याख्या कीजिए ।

Is there any difference between pictorial form and logical form in Ludwig Wittgenstein's picture theory of language ? How does the logical form define the relation between language and reality ? Explain. 15

4.(a) सोरेन कीर्केगार्द 'विषयिनिष्ठता' की अवधारणा को किस प्रकार परिभाषित करते हैं ? उनके द्वारा प्रतिपादित अस्तित्व की तीन अवस्थाओं के सन्दर्भ में इसकी व्याख्या कीजिए ।

How does Soren Kierkegaard define the notion of 'subjectivity' ? Explain it with reference to three stages of existence as propounded by him. 20

4.(b) आत्म के ज्ञान के सन्दर्भ में रेने देकार्त निश्चितता की अवधारणा की किस प्रकार व्याख्या करते हैं ? जगत के ज्ञान से यह किस प्रकार भिन्न है, इसकी समालोचनात्मक विवेचना कीजिए ।

How does Rene Descartes explain the notion of certainty with reference to knowledge of the self ? Critically discuss the way it differs from the knowledge of the world. 15

4.(c) जॉन लॉक जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन क्यों और कैसे करते हैं ? लॉक की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के स्वरूप एवं स्रोत का निरूपण कीजिये ।

Why and how does John Locke refute the innate ideas ? Elucidate the nature and source of knowledge in Locke's epistemology. 15

खण्ड 'B' SECTION 'B'

5.(a) पुरुष की सत्ता सिद्धि हेतु सांख्य दर्शन में प्रदत्त प्रमाणों का परीक्षण एवं मूल्यांकन कीजिये ।

Examine and evaluate the proofs given by Sāṁkhya philosophy to prove the existence of Puruṣa. 10

5.(b) वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'सामान्य' की सत्तामीमांसात्मक स्थिति क्या है ? समीक्षात्मक परीक्षण कीजिये ।

What is the ontological status of Sāmānya, according to Vaiśeṣika Philosophy ? Critically examine. 10

5.(c) पातञ्जल योग के अनुसार समाधि के स्वरूप एवं विविध स्तरों का विवेचन कीजिये तथा इसमें ईश्वर की भूमिका का परीक्षण कीजिये ।

Discuss the nature and different stages of Samādhi as per Pātañjala yoga and examine the role of Īśvara in it. 10

5.(d) जैनों की कर्म की अवधारणा उनके मोक्षशास्त्र को किस प्रकार प्रभावित करती है ? समालोचनात्मक व्याख्या कीजिए ।

How does Jaina view of Karma bear upon their soteriology ? Critically discuss. 10

5.(e) क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि 'विवर्तवाद परिणामवाद का तार्किक विकास है' ? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिये ।

Do you agree with the view that 'Vivartavāda is the logical development of Pariṇāmavāda' ? Give reasons in support of your answer. 10

6.(a) बौद्धों का क्षणिकवाद सिद्धांत उनके कर्म सिद्धान्त से कितना सुसंगत है ? इस सम्बन्ध में बौद्ध उनके प्रतिपक्षियों द्वारा उत्थापित आक्षेपों का उत्तर किस प्रकार देते हैं ? समालोचनात्मक व्याख्या कीजिए ।

How compatible is Buddhist theory of momentariness with their theory of Karma ? In this regard how do Buddhists respond to objections raised by their opponents ? Critically discuss. 20

6. (b) 'निरपेक्ष को अभिगृहीत किये बिना जैन दर्शन का सापेक्षतावादी सिद्धान्त तार्किक रूप से धारणीय नहीं हो सकता।' इस मत का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिये तथा अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिये।

'The doctrine of 'Relativism' of Jain Philosophy cannot be logically sustained without postulating 'Absolutism'.' Critically examine this view and give reasons in the favour of your answer. 15

6. (c) मीमांसक न्याय के इस मत का कि अर्थापत्ति का अन्तर्भाव अनुमान में हो जाता है, किस प्रकार खन्डन कर अर्थापत्ति की एक स्वतन्त्र वैध ज्ञान स्त्रोत (प्रमाण) के रूप में स्थापना करते हैं ? समालोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

How do Mīmāṁsakas refute the Nyāya view that Implication (arthāpatti) is reducible to Inference (anumāna) and establish Implication as an independent means of valid knowledge (pramāṇa) ? Critically discuss. 15

7. (a) ज्ञान की स्वतःप्रामाण्यता की स्वीकृति के बावज़ूद प्रभाकर एवं कुमारिल भ्रमात्मक ज्ञान की व्याख्या में क्यों और कैसे भिन्न हैं ? विवेचन कीजिये।

Inspite of accepting the intrinsic validity of knowledge, why and how Prabhākar and Kumārila differ in their interpretation of erroneous cognition ? Discuss. 20

7. (b) बौद्ध दर्शन की त्रिरत्न की अवधारणा तथा इनके अन्तःसम्बन्धों की व्याख्या कीजिये। बौद्ध दर्शन के नैरात्म्यवाद के साथ त्रिरत्न की सुसंगतता का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिये।

Explain Buddhist concept of Tṛratna and their internal relation. Critically examine the consistency of Tṛratnas with the Buddhist concept of No-soul (Nairātmyavāda). 15

7. (c) चारवाक के अनुमान के विरोध में दिए गए आक्षेपों का नैयायिक किस प्रकार प्रत्युत्तर देते हैं तथा अनुमान को एक स्वतन्त्र ज्ञान-स्रोत के रूप में स्थापित करते हैं ? समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

How do Naiyāyikas respond to Cārvāka's objections against inference (anumāna) and establish inference as an independent means of knowledge ? Critically discuss. 15

8. (a) 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नाऽपरः'। इस कथन के आलोक में अद्वैत वेदान्त में निरूपित ईश्वर, जीव एवं साक्षी की सत्तात्मक स्थिति की व्याख्या कीजिये।

'Brahma satyam jaganmithyā, jīvo Brahmaiva nāparaḥ'. In the light of this statement explain the ontological status of Iśvara, Jīva and Sākṣī as elucidated in Advaita Vedānta. 20

8. (b) श्रीअरविन्द द्वारा प्रतिपादित वैयक्तिक विकास हेतु त्रिविध रूपान्तरण की प्रक्रिया में समग्र योग की भूमिका की व्याख्या एवं मूल्यांकन कीजिये।

Explain and evaluate the role of integral yoga in the process of triple transformation for individual evolution as expounded by Sri Aurobindo. 15

8. (c) मध्वाचार्य की मोक्ष की अवधारणा रामानुजाचार्य की अवधारणा से कैसे भिन्न है ? व्याख्या कीजिये।

How does the concept of Liberation (Mokṣa) of Madhvācārya differ from that of Rāmānujācārya ? Explain. 15